

---

# Dvijakrita Shiva Stuti 1

---

## द्विजकृता शिवस्तुतिः १

---

### Document Information

---

Text title : Dvijakrita Shiva Stuti 1

File name : dvijakRRitAshivastutiH1.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 23| 622-637||

See corresponding nAmAvalI

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 21, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

द्विजकृता शिवस्तुतिः १



(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)

--

स्वस्वरूपं कृपासिन्धुर्दर्शयामास सत्वरम् ।  
उमासंश्लिष्टवामाङ्गं चन्द्रशेखरमीश्वरम् ॥ ६२२ ॥  
दृष्ट्वा प्रहृष्टहृदयस्तुष्टावाष्टविधाकृतिम् ॥ ६२३ ॥

--

द्विजः -  
नमस्ते पृथिवीरूप नमस्ते जलरूपिणे ।  
नमस्तेजःस्वरूपाय वायुरूपाय ते नमः ॥  
नम आकाशरूपाय सूर्यरूपाय ते नमः ॥ ६२४ ॥  
नमश्चन्द्रस्वरूपाय नमो यज्वरूपिणे ।  
नमः सर्वस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः ॥ ६२५ ॥  
नमस्त्रिशूलहस्ताय नमः परशुधारिणे ।  
नमो विधूतपापाय गौरीनाथाय ते नमः ॥ ६२६ ॥  
नमश्चन्द्रकिरीटाय परमाय नमो नमः ।  
नमो वेदस्वरूपाय नीरूपाय नमो नमः ॥ ६२७ ॥  
नमो वेदान्तवेद्याय भववैद्याय ते नमः ।  
निष्कलाय नमस्तेऽस्तु निर्गुणाय नमो नमः ॥ ६२८ ॥  
नमः शान्ताय ते शम्भो निरवद्याय ते नमः ।  
निरञ्जन नमस्तेऽस्तु निष्प्रपञ्च नमो नमः ॥ ६२९ ॥  
निर्लिप्ताय नमस्तेऽस्तु निराधाराय ते नमः ।  
निरीशाय नमस्तेऽस्तु सर्वेशाय नमो नमः ॥ ६३० ॥

नमो ज्ञानस्वरूपाय ज्ञानातीताय ते नमः ।

नमो ज्ञानैकगम्याय ध्यानगम्याय ते नमः ॥ ६३१ ॥

नमः परमरूपाय परमानन्दरूपिणे ।

सच्चिदानन्दरूपाय नमस्ते सर्वसाक्षिणे ॥ ६३२ ॥

नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञकर्मफलप्रद ।

नमस्ते करुणासिन्धो करुणामूर्तये नमः ॥ ६३३ ॥

अनन्तसोमसूर्याग्निप्रतिमाय नमो नमः ।

अनन्तामेयकल्याणगुणपूर्णाय ते नमः ॥ ६३४ ॥

सर्वज्ञाय नमस्तेऽस्तु भक्ताभीष्टप्रदाय च ।

भूतभावन भूतेश नमस्ते भक्तवत्सल ॥ ६३५ ॥

भूतव्रतप्रिय श्रीमन्नमस्ते भूतिभूषण ।

भूतिभूषितभक्तेष्टभूतिदानविचक्षण ॥ ६३६ ॥

अभयप्रद विश्वात्मन्वरदामरपूजित ।

विष्णुब्रह्मार्चितेशान प्रसीद गिरिजापते ॥ ६३७ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते द्विजकृता शिवस्तुतिः १ सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २३ । ६२२-६३७ ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 23 . 622-637..

Notes:

Dvija द्विज eulogizes Śiva शिव as he receives His Darśana दर्शन.

The Dvijakṛtā Śivastutyāntargate ŚivaNāmāvaliḥ द्विजकृता शिवस्तुत्यन्तर्गते शिवनामावलिः


१ that has been derived from this Stutiḥ स्तुतिः that can be referred to from the link given

below.

Proofread by Ruma Dewan

---

pdf was typeset on June 21, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

